International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

दक्षिण एशिया में बढ़ता जल संकट . भारत चीन जल युद्ध की सम्भावना और उसका भारत के पूर्वोत्तर प्रदेशों पर प्रभाव होने का अंदेशा

भारती शर्मा

शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर

Abstract

पानी को दुनिया के लिए प्रमुख संकटों में से एक है पर पानी को समाज और आर्थिक विकास के लिए अगले साल 10 सालों में सबसे बड़ा चुनौती माना गया है I पृथ्वी की सतह के समय 71% पानी में से 3% ही मीठा पानी है जो कि लगभग 2% ग्लेशियर से मिलता है यह प्रतिशत भी तेजी से घट रहा है इसका मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या और आर्थिक गतिविधियां है।

भारत देश में नदियों का जाल है परंतु इसकी महत्वपूर्ण नदियों में से दो चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र से आती है ,भारत और चीन दक्षिण एशिया के दो महान देश है इनकी जनसंख्या जो कि विश्व की जनसंख्या का 40 प्रतिशत है चीन द्वारा तिब्बत को 1951 में अधिग्रहित करने के कारण चीन की सीमाएं भारत से लग गई हैं ,और अब भारत में आने वाली ज्यादातर नदियों के मुहाने पर चीन है I

भारत चीन के तनाव पूर्ण आपसी सम्बन्ध भी समस्या है भारत इनका सामना लगातार करता रहा है और अभी भी दृढ़ता पूर्वक कर रहा है ,पर इन सबसे भयानक और चिंता जनक स्थिति चीन की जल युद्ध की तैयारी है। पानी के बँटवारे को लेकर कोई भी संधि चीन ने नहीं की है।

1ण परिचय

दुनिया का इकोनॉमिक फोरम कई वर्षों से पानी को दुनिया के लिए प्रमुख संकटों में से एक बता रहा है पर 2015 की उनकी रिपोर्ट में पानी को समाज और आर्थिक विकास के लिए अगले साल 10 सालों में सबसे बड़ा चुनौती माना गया है ए पृथ्वी की सतह के समय 71ः पानी में से 3ः ही मीठा पानी है जो कि लगभग 2ः ग्लेशियर से मिलता है यह प्रतिशत भी तेजी से घट रहा है इसका मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या और आर्थिक गतिविधियां है ।इन सब के साथ यदि हम भविष्य को देखें तो लगता है कि 2030 तक दुनिया में पानी की बहुत कमी हो जाएगीए पानी की कमी से उपजाऊ जमीन भी पैदावार नहीं दे सकेगी और दुनिया जल युद्ध की कगार पर पहुंच जाएगी ए दुनिया के सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि सभी देश अपने देश में बहने वाली नदियों पर अपना पूरा अधिकार समझते हैं पर नदियां देशों की सीमाओं के हिसाब से नहीं बहतीं दुनिया की ज्यादातर नदियां अंतर्देशीय हैं ।दुनिया की 46ः नदियां प्राकृतिक रूप से कई देशों की सीमाओं पर हैं स जीवन और विकास दोनों के लिए आवश्यक आधार भूत तत्वों में पानी का महत्वपूर्ण स्थान है स

भारत अपनी बढ़ती जनसंख्या के साथ आर्थिक प्रगति कर रहा है एइन दोनों ही कारणों से पानी की खपत बढ़ रही हैए जिससे भारत के जलाशयों और वातावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है । भारत देश में नदियों का जाल है परंतु इसकी महत्वपूर्ण नदियों में से दो चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र से आती है एभारत और चीन दक्षिण एशिया के दो महान देश है इनकी जनसंख्या जो कि विश्व की जनसंख्या का 40 प्रतिशत है चीन द्वारा तिब्बत को 1951 में अधिग्रहित करने के कारण चीन की सीमाएं भारत से लग गई हैं एऔर अब भारत में आने वप्ली ज्यादातर नदियों के मुहाने पर चीन है ए

भारत चीन के तनाव पूर्ण आपसी सम्बन्ध भी समस्या है भारत को चीन बहुत सालों से घेर रहा है चीन की स्ट्रिंग ऑफ पल्स जिसके साथ चीन हिंद महासागर में आ गया है 1962 के बाद ही से लगातार चीन की ओर से होने वाले घुसपैठ और 2018 का डोकलाम विवाद और अभी 2020 का गलवान घाटी विवाद यह सब इसके प्रमाण हैं। इन सब सालों का अनुभव कर भारत इनका सामना लगातार करता रहा है और अभी भी दृढ़ता पूर्वक कर रहा है ।पर इन सबसे भयानक और चिंता जनक स्थिति चीन की जल युद्ध की तैयारी है। पानी के बँटवारे को लेकर कोई भी संधि चीन ने नहीं की है।

2ण भारत के उत्तर पूर्वी प्रदेश और भारत चीन संबंधों का इतिहास

भारत 1947 में आजाद हुआ इसके दो हिस्से हो गए पाकिस्तान और भारत द्य भारत से ही चीन में बुद्ध धर्म पहुंचा प्राचीन समय से ही भारत और चीन के बीच व्यापप होता रहा है इसके लीये सिल्करोड का उपयोग दोनों ही जगह के लोग करते थे। ये बहुत कठिन पर्वतीय मार्ग होने से बहुत से क्षेत्र किस देश की सीमा के तहत हैं ये स्पष्ट नहीं होतप। परन्तु जब चीन ने भारतीय क्षेत्रों पर अधिकार ज़माने का प्रयास किया तब भारत और चीन का 1962 में युद्ध हुआ और इस युद्ध में हारने पर भारत को बहुत ज्यादा शर्मिंदगी का उठानी पड़ी ८

भारत और चीन की सीमा रेखा 3488 किलोमीटर लंबी है एऔर इस पर विवाद चल रहा है।चीन भारत के उत्तरी और उत्तर पूर्वी दो दिशाओं पर जुड़ा हुआ है एइसमें भारत के उत्तरी सीमांत पर भारतीय क्षेत्र लद्दाख ए हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड है और उत्तर पूर्वी सीमांत पर सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश हैण चीन भारत का लगभग 100000 स्क्वायर किलोमीटर का एरिया अवैध रूप से दबाए हुए हैं। भारत के उत्तर पूर्वी सीमांत में आठ प्रदेश हैं एजो कि आपस में भी भिन्नता रखते हैं। अलग.अलग भौगोलिक बनावट के साथ ही अलग जनजातियाँ अलग.अलग भाषाएं और अलग.अलग संस्कृतियों के लोग हैं। ये सीमान्त हिमालय में स्थित ऐसी जगह है जहाँ भरपूर जैवविविधता दिखती है दृ यहां पर एक सींग वाला गेंडाए लाल पांडा और ऐसी बहुत सारी प्रजातियां मिलती हैं जो खास है। एक और विशेषता है यहां आठों प्रदेश एक या अधिक देशों से जुड़े हुए है इनकी स्थिति अंतराष्ट्रीय सीमा रेखा पर है द्य इस क्षेत्र से पांच देश जुड़े है। नेपाल एचीनए भूटान एबांग्लादेश और म्यांमार इसके साथ ही एक विशेषता यह है कि यह भारतीय क्षेत्र से सिर्फ 22 किलोमीटर चौड़े सिलिगुड़ी गलियारे से भारत के मुख्य भाग से जुड़ा हुआ हैद्य

3ण भारत के उत्तर पूर्वी प्रदेशों में बहनेवाली नदियों के पानी को लेकर भारत की चिंताएं

तिब्बत इसे वॉटर टावर ऑफ द वर्ल्ड भी कहा जाता है क्योंकि इससे बहुत सारी नदियां निकलती है ष्भारत के उतर पूर्वीय प्रदेशों में बहने वाली लगभग सभी नदियां यहां से आती हैं। । हर प्रदेश की भूमि की बनावट अलग है हिमालयीन प्रदेश होने से कई क्षेत्र बहुत ज्यादा ऊँचे और कठिन पहाड़ों के बीच भी बसे हैं ए सभी प्रदेशों की पानी की जरुरत नदियों व् झरनो से ही पूरी ती है ए मुख्यतः ये नदिया ब्रह्मपुत्र नदी की ही सहायक नदियां है। हर प्रदेश में ब्रह्मपुत्र नदी से जुडा ही नदियों का जाल है।देश के बाकि हिस्सों से यहाँ पहुँचने के लिए ब्रह्मपुत्र नदी को पार करके आना पड़ता है। अतः इस नदी में हुई कोई भी हलचल इस पूरे क्षेत्र को प्रभावित करेगी।

ब्वनतजमेलरू ळववहसम उंचे

एशिया में दुनिया की 60: आबादी रहती है तथा यहां की जनसंख्या वृद्धि दर भी दुनिया में सबसे ज्यादा है बीसवीं शताब्दी में इसकी जनसंख्या 4 गुना तक बढ़ गई है द्य परंतु यहां पानी की उपलब्धता के साधन तो उतने ही हैए दुनिया की सबसे ज्यादा जनसंख्या वाले देशों में से दो देश भारत व चीन यहां स्थित है द्य जिनमें सयुंक्त राष्ट्रसंघ के सर्वे के डाटा

के अनुसार 18 : व 19 : जनसंख्या रहती है और दुनिया का सात और चार पर्सेंट पानी ही यहां उपलब्ध है।

चीन के आर्थिक विकास में भी सबसे बड़ी बाधा पानी की कम उपलब्धता है अतः चीन के राष्ट्र हित में आधारभूत तत्व पानी के स्रोतों पर नियंत्रण करना ही रहा है अभी चीन की प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता विश्व के औसत का 28: है। जैसे.जैसे जनसंख्या एउद्योग और आर्थिक क्षेत्र बढ़ रहा है पानी की जरूरत है बढ़ती जा रही हैं। इन्हें पूरा करने के लिए उसने बांध बनाना और नदियों के बहाव को परिवर्तित करने के प्रोजेक्ट बनाए हैं। ऐतिहासिक रूप से ही चीन में पानी के वितरण व्यवस्था अनियमित रही है। उसके पांच में से चार पानी के स्त्रोत दक्षिणी प्रांत में स्थित है जबकि उत्तर के प्रांत में उसकी आधे से ज्यादा जनसंख्या निवास करती है ।अतः सारे आर्थिक और कृषि कार्य इसी क्षेत्र में किए जाते हैं यहां से 20: पानी की उपलब्धता है कृषि क्षेत्र जिसमें 70 : और कोयला उद्योग जिसमें 20: पानी की आवश्यकता है वह बुरी तरह पानी की कमी से जूझ रहे हैं चीन के बड़े तेजी से बढ़ते हुए शहर बीजिंग और तेनजिंग भी इसी क्षेत्र में है चीन में मात्रा और गुण दोनों ही दृष्टि से पानी के चुनौती भरे हैं जमीनी पानी में से 60: है यह आखिरी चीन सरकार के अनुसार हैं इसमें से आधा पानी शोधन के बाद ही पीने लायक होता है चौथाई पानी तो इतना गंदा है कि वह उद्योगों के लिए भी अनुपयोगी है ।चीन में ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के तहत दो तिहाई हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट पूरे हुए हैं इन्हें पूरा

करने के लिए बांध बनाना जरूरी है। चीन की 12वीं पंचवर्षीय योजना कहती है कि पानी की कमी चीन के आर्थिक विकास को सबसे ज्यादा रोकती है।

सन 1998 चीन के प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ ने कहा था श्चीन के अस्तित्व को बचाने के लिए पानी के स्रोतों को तलाशना जरूरी होगा प्ए इसलिए चीन की सरकार ने 2 योजनाएँ बनाई है पहला पानी के प्रभावी उपयोग को बढ़ावा देना इसको 3 रेड लाइन भी कहा जाता है एदूसरा साउथ नॉर्थ वाटर ट्रांसफर प्रोजेक्ट जिससे लगभग 45 बिलियन क्यूबिक मीटर पानी हर साल पीली नदी ;येलो नदी द्ध में भेजा जाएगा ए इसमें 62 बिलियन डॉलर का खर्च आएगा बहुत से लोगों का पुनर्वास कराना होगा इस प्रोजेक्ट की पश्चिमी लाइन बहुत ही विवादित है इसमें यारलूम नदी के मोड पर एक बांध बनाना है या मोड नदी के बहाव को असम की ओर मोड़ता है इससे 200 बिलियन पानी यारलूंग नदी से येलो नदी में जाएगा ।इस प्रकार पानी के बहाव को बदलने का प्रभाव भारत में बह रही ब्रह्मपुत्र नदी में पानी की मात्रा पर पड़ेगा क्यों की यारलुंग सांगपोए ब्रह्मपुत्र का ही नाम है।

4ण चीन की ब्रह्मपुत्र पर योजना

ब्रह्मपुत्र नदी दुनिया की बड़ी नदियों में से एक हैण इसका उद्गम तिब्बत ;चीनद्ध के पठार से हैण इसका बहाव दक्षिणी तिब्बत से है ए यह नदी हिमालय से होते हुए भारत और बांग्लादेश से बहते हुए बंगाल की खाड़ी में गिरती है ण चीन ब्रह्मपुत्र के मुहाने पर स्थित है इसलिए उसे वैसे भी सबसे ज्यादा फायदा मिलता है। नदी के आगे के बहाव को वह प्रभावित कर सकता है। नदी के मुहाने की स्थिति पर रहते हुए चीन 42 अंतर्राष्ट्रीय नदियों को एशिया के अपने पड़ोसी देशों के साथ बांटता है। मुहाने पर चीन की स्थिति होने से और भारत की स्थिति लगभग मध्य में होने से पाकिस्तान और बांग्लादेश की नीचे की ओर होने से नदी के पानी को उपयोग करने की सब की स्थितियां अलग अलग हो जाती है ।और सभी देश अपने अपने हिसाब से पानी पर अपना हक जता सकते हैं। पानी उपयोग करने का हक सभी देशों को बराबर होता है इसे िवतउवदम कवबजतपद कहते हैं इस के तहत मुहाने का देश बिना अगले देशों की जरूरत को सोचे पानी अपनी जरूरत के अनुसार उपयोग कर सकता है ।निचले देश अपना अधिकार एप्ससेल्यूट टेरिटोरियल इंटीग्रिटी के आधार पर यह मांग रखते हैं कि उनको मिलने वाला पानी ऊपर के देश अप्रभावित रखेंए पर चीन की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि वह अपने पानी की योजनाओं को ऐसे बना सकने में लगा हुआ हैएजिससे वह दक्षिण एशिया के पानी पर पूरा नियंत्रण कर ले और नीचे के देशों में जब चाहे जब सूखा ला दे या जब चाहे बाढ़ ला दे वो पानी की बंटवारे को लेकर किसी भी संधि पर हस्ताक्षर नहीं करता।

सन 2014 में चीन ने ब्रह्मपुत्र नदी पर वांग्मयम डैम बनाया है तब से इस के किनारे रहने वाले सभी क्षेत्र पानी की कमी से जूझ रहे हैं यह पनबिजली के लिए सबसे बड़ा डैम है भारतीय और विदेशी बहुत से सुरक्षा सलाहकार इस कारण से भारत और चीन के बीच जल युद्ध की संभावना को व्यक्त कर चुके हैं ण

चीन को तिब्बत से कई बड़ी नदियां मिली जिन पर बांध बनाकर पानी को उत्तर चीन की ओर भेजने का प्रबंध उसने किया स पूरे एशिया में तिब्बत से जाने वाली नदियों पर चीन का कब्जा हो गया अपने देश के उत्तरी क्षेत्र में पानी की जो कमी थी उसके लिए कई बांध बनाए पूरे विश्व में जितने बांध हैं उनका 25 : अकेले चीन में हैण चीन ने अपने रिवर सिस्टम में एशिया की महत्वपूर्ण नदियां जैसे इंडस एगंगा ए ब्रह्मपुत्र एइरावडी एसालवीनए मेकॉन्ग ए यांग तेज और हुआंग ही सारी नदियों को रखा है चीन के वैज्ञानिकों के अनुसार अपने स्रोतों के मुकाबले तिब्बत से 40000 गुना ज्यादा पानी चीन को मिलता है ए

5ण भारत चीन के युद्ध की भूमिका

पिछले कई सालों में बहुत से सुरक्षा विशेषज्ञों ने बार.बार इस बात पर चर्चा की है कईयों ने न्यूज़पेपर में कई शोधार्थियों ने विभिन्न शोध लेखों में इस पर अपने अपने अध्ययन करके चीन की डैम बनाने की चाल को स्पष्ट किया हैए कि चीन लगातार डैम बनाता जा रहा है एऔर अपने देश की पानी की जरूरतों से ज्यादा उसका ध्यान दक्षिण एशिया में बहने वाली नदियों के पानी का कंट्रोल अपने हाथ में लेना है णभारत में ब्रह्मपुत्र नदी पर बांध कर बांध बनाकर चीन ने भारत के विरुद्ध युद्ध की तैयारी की हुई है ए

श्वायरश में आर्टिकल में बहुत से पेपरों का उल्लेख किया है स जिसके सहारे उन्होंने तीन मुद्दों को उठाया अगर यह लोग भारत चीन के युद्ध को अवश्यंभावी मानते हैं एतो उनकी चिंताएं यह 3 जगहों से हो सकती हैं प्पहला चीन बहुत गंभीर पानी की कमी से जूझ रहा है तो वह ब्रह्मपुत्र का पानी अपने क्षेत्र उत्तर की ओर मोड़ दे जो वह कर भी चुका है द्यदूसरे देशों में क्षेत्रों में कभी भी अचानक कोई भी आपदा सूखा या बाढ़ ला सकता है तीसरा डाउनस्ट्रीम देश से कोई पानी को लेकर संधि करने को तैयार नहीं है तो यह इसकी गलत मंशा को ही दिखाता है द्ययह पानी पर बने अंतरराष्ट्रीय कानूनों के खिलाफ है वह जियोलॉजिकल डाटा भी अपने से निचले देशों को नहीं देता है पजिससे कि वे आपदा प्रबंधन कर सके दुनिया की 40ः जनसंख्या तिब्बत से बहने वाली नदियों के पानी पर निर्भर करती है द्य

भारत और चीन कई अंतरराष्ट्रीय ट्रांसबाउंड्री नदियों में हिस्सेदारी रखते हैं पर ब्रह्मपुत्र जो सबसे बड़ी नदी है उसी पर ज्यादा इनका विवाद है क्योंकि ब्रह्मपुत्र नदी दुनिया की बड़ी नदियों में से एक है इसकी लंबाई 2900 किलोमीटर है और बहाव से इसका

दुनिया में पांचवा नंबर हैद्य यह कैलाश पर्वत हिमालय से निकलकर 5300 मील रास्ता तय करती है यह तिब्बत से भारत के अरुणाचल प्रदेश असम और बांग्लादेश में बहते हुए बंगाल की खाड़ी में गिरती है यह तिब्बत से 293000 स्क्वायर किलोमीटर भारत और भूटान में 240000 स्क्वायर किलोमीटर और बांग्लादेश में 47000 स्क्वायर किलोमीटर बहती है इसका बेसिन 580000 किलोमीटर बांग्लादेश में भी जाता है भारत और बांग्लादेश देशों की मुख्य नदी हैद्य

ब्रह्मपुत्र नदी से चीन में ब्रह्मपुत्र नदी का 50: से ज्यादा बेसिन एरिया है और इसलिए वहां पर उसका पोटेंशियल यूज़ करना सबसे ज्यादा आसान है उसके लिएए पर ब्रह्मपुत्र भारत के लिए भी इसलिए ज्यादा जरूरी है क्योंकि इस का 30: मीठा पानी और 40 : के टोटल हाइड्रो पावर पोटेंशियल इस नदी से भारत को मिलता है अगर चीन इसमें ज्यादा फायदा लेगा उससे भारत को दिक्कत हो जाएगी बहुत सारे न्यूज़पेपर में जैसे कि न्यूयॉर्क टाइमएद गार्जियन एसाउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट एवाशिंगटन टाइम और भारत के बीच बहुत से घरेलू न्यूज़पेपर टाइम्स ऑफ इंडियाए इंडिया टुडे इंडियन एक्सप्रेस आदि में इस चीज का बार.बार उल्लेख किया गया है की ब्रह्मपुत्र के पानी के बंटवारे पर कुछ संधि होनी चाहिए नहीं तो यह एक बहुत बड़े जल युद्ध का रूप ले लेगा द्य

क्रिस्टोफर मार्ट ने 2013 में अपनी बुक वाटर व्हाट द ब्रह्मपुत्र रिवर एंड इंडियन रिलेशंस मै भी इस बात पर ध्यान आकर्षित किया है चाइना के बहुत सारे वैज्ञानिक बार.बार इस बात को मना करते रहे कि चीन का कोई भी इरादा ब्रह्मपुत्र का पानी मोड़ने का नहीं हैण् ब्रह्म चेलानी ने ष्वाटर कंफर्म एशियाष् में इस पर विचार किया है और उनके अनुसार भारत को इस और बहुत ध्यान देना है क्यों कि भारत और चीन के बीच पानी पर भविष्य के बहुत ज्यादा संभावित युद्ध होंगे द्य

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने पहला भाषण दिया जो 2013 में एक्स सर्विसमैन रैली रेवाड़ी में दिया थाए हरियाणा में उन्होंने इस बात से बहुत ज्यादा संबंध दिखाया था कि चीन के प्रोजेक्ट जो है वह ब्रह्मपुत्र का पानी रोक रहे हैंए 2014 में उन्होंने शी जिनपिंग के भारत आने पर उनसे इस विषय पर बात की तरुण गोगोई जो उस समय असम के चीफ मिनिस्टर थे उन्होंने यह मुद्दा उठाया कि इस बात पर विचार किया जाना चाहिए कि चीन का यह कदम ब्रह्मपुत्र पर डैम बनाने का भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों को बहुत नुकसान पहुँचाएगाद्य

चीन का पहले भी ट्रैक रिकॉर्ड खराब है वह अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बड़े.बड़े डैम प्रोजेक्ट बना रहा है जैसे थ्री गॉर्जस डैम और साउथ नॉर्थ को पानी भेजने के अन्य प्रोजेक्ट ण्परन्तु इन सब पर जो भी गतिविधियां हो रही है वह उनकी सूचनाएं बाहर नहीं जाने देता हैण् इसी तरह उसने ट्रांसबाउंड्री नदी मेकॉन्ग पर भी डैम बनाए हैं एजिससे दक्षिणी एशिया के देशों में भी कभी पानी की कमी हो जाती है और कभी बाढ़ आ जाती हैप् ब्रह्मपुत्र नदी पर जो भी डैम बना रहा है उसके लिए निचली सतह के देशों से कोई भी उसने अनुमति या संधि नहीं की है प

भारत चीन के एसडब्ल्यूडी ;साउथ नॉर्थ वाटर डायवर्सन प्रोजेक्टद्ध और जी डब्ल्यू डब्ल्यू डी पी ; ग्रैंड वेस्टर्न वाटर डायवर्सन प्रोजेक्टद्ध इन दोनों प्रोजेक्ट के प्लानिंग से चिंतित है क्योंकि यह ब्रह्मपुत्र पर होने वाले हैं एजिससे भारत में जो ब्रह्मपुत्र का पानी आता है उस पर प्रभाव पड़ेगाण् निचली सतह पर स्थित देशों का ;कवूदेजतमंउ बवनदजतपमे काद्ध सोचना यह हैए कि चाइना ने जो 1997 यूएन कन्वेंशन ऑन द लॉ ऑफ द नॉन नेवीगेशनल यूजेस ऑफ इंटरनेशनल वाटर कोर्स एस यू एन डब्ल्यू सी के विरुद्ध मतदान किया था उसका मुख्य कारण यही थाए कि वह सभी नदियों पर अपना प्रभाव बढ़ा रहा हैए और उससे तराई वाले देशों को जो नुकसान हो रहा है उनकी ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रहा हैप् हमारे उत्तर पूर्वी प्रदेश जो चुनौतियों का सामना कर रहे हैं उसमें हर साल मानसून के समय जब बर्फ पिघलती थी तभी बाढ़ आती थी पर अब यह कभी भी होने लगा है इसका मुख्य कारण है ब्रह्मपुत्र जो चाइना से भारत होते हुए बांग्लादेश में जाती है हमारे उत्तर पूर्वी पूरे आठों प्रदेशों की सभी नदियां ब्रह्मपुत्र से मिलती हैं यह दुनिया का नौवा सबसे बड़ा डेल्टा है और सबसे ज्यादा लंबा कैनयन बनाता है 5000 मीटरण् ;ग्रैंड कैनाल कोलोरेडो नदी से तीन गुना ज्यादा गहरा हैद्ध

6ए उत्तर पूर्वी राज्यों पर प्रभाव

27 फरवरी 2012 को अरुणाचल प्रदेश के सियांग में देखा गया कि ब्रह्मपुत्र नदी लगभग सूख से गई है श्ब्रह्मपुत्र ट्राइसेक्ट इन अरुणाचल प्रदेश टाउन इस चाइना रिस्पांसिबलघ्श इकोनामिक टाइम् मार्च 1 ए2012 एक चिंता का विषय हो गया कि बहुत से लोग जो इस नदी के आसपास रहते हैं और अपने जीवनयापन के लिए इसी पर निर्भर है वह बहुत ज्यादा घबरा गए फिर इसका कारण ढूंढने की कोशिश की गई तो यह समझ में आया कि यह सब इसका कारण जो ऊपर के हिस्से में चाइना द्वारा डैम बनाया गया है उससे सब हो रहा है यूनाइटेड नेशंस ने भी कहा है कि लगभग आधे विश्व में 2025 तक हालत ये हो जाएगी की बहुत से लोग पानी की कमी से जूझ रहे होंगे और इसमें से ज्यादातर लोग चीन और भारत के भारत के होंगे ण्इनका कारण है लगातार बढ़ती आर्थिक गतिविधियां एमॉडर्नाइजेशन एऔर लगातार बढ़ते हुए कृषि क्षेत्र एऔद्योगिक क्षेत्रए बढ़ता हुआ मिडिल क्लास और चाइना में जानवर ज्यादा बढ़ाए जा रहे हैं क्योंकि वहां पर माँसाहार ज्यादा प्रचलित है एइन सब का बहुत ज्यादा दबाव पानी की सप्लाई क्षेत्रों में पड़ रहा है द्य इसके कारण पर्यावरण परिवर्तन भी बढ़ता जा रहा है और यह सब मिलकर मीठे पानी की कमी कर रहे है।

भारत के उत्तर पूर्वी प्रदेशों में निम्न प्रकार की कठिनाइयां देखने में आ रही है पहला अवैध शरणार्थी समस्याए इसमें आसपास के देशों जैसे भूटानए म्यांमार एचाइना और बांग्लादेश से बड़ी संख्या में लोग हमारी उत्तर पूर्वी प्रदेशों में आकर घुसपैठ कर रहे हैं और बसते चले जा रहे हैं दूसरा बाढ़ के कारण बहुत सारे लोगों को अपनी जगह छोड़कर दूसरी जगह जाना पड़ रहा है क्योंकि ब्रह्मपुत्र की बाढ़ की आठों प्रदेशों में समस्या है तो बहुत सारे लोग लाखों की संख्या में इधर.उधर हो रहे हैं और बाढ़ के कारण हमारी चावल एचाय सब की खेती को बहुत ज्यादा नुकसान हो रहा है और बायो रिजर्व्स अभी जो एरिया में हैं एवह सब धीरे.धीरे खत्म होते जा रहे हैं चीन हमारे सामने मुख्य समस्याएं पैदा कर रहा है पहला नवंबर 2006 में चीन के एंबेसडर जो इस समय भारत में थे ष्सूचीष ने कहा था कि जैसे अरुणाचल प्रदेश चीन का क्षेत्र है ए 2007 चाइना ने गणेश कोयू को जो कि भारतीय एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस आईएएस ऑफिसर है ;अरुणाचल सेद्ध को वीजा देने को मना कर दिया जो कि एक ऐसी आईएएस ऑफिसर की टीम का हिस्सा थे जो शिक्षण भ्रमण पर बीजिंग और शंघाई जा रहे थे 107 आईएएस ऑफिसर के टीम में से उसका हिस्सा थे चाइना ने कहा कि कोई अरुणाचल प्रदेश के नागरिकों को यहाँ आने के लिए कोई भी वीज़ा की जरूरत नहीं है ण्परंतु मैंने खुदने अरुणाचल प्रदेश में दो बार विजिट बिना वीजा के किया अगर अरुणाचल प्रदेश चीन का हिस्सा है तो हम लोग वहां पर बिना वीजा के कैसे जा सकते हैंघ्

30 जून 2009 में भारत सरकार के द्वारा अरुणाचल प्रदेश के लिए लोन बैंक से अरुणाचल प्रदेश मैनेजमेंट उसको उसकी रिक्वेस्ट को रुकवाने की कोशिश की उसके बाद भारत की विदेश में हुई थी उस पर सवाल उठाए 2010 में अमेरिका के डिपार्टमेंट ऑफ डिफेंस की रिपोर्ट ने यूथ कांग्रेस में को इंडिकेट करने के लिए दी गई थी उसमें ओल्ड लिक्विड फ्यूल न्यूक्लियर कैपेबल बे3 इंटरम उसमें उल्लेख किया गया क्या चीन पुरानी लिक्विड फ्यूल मिसाइल को रिप्लेस कर के नई न्यूक्लियर कैपेबल बे3 इंटरमीडिएट वेबसाइट जोकि मीडियम रेंज बैलिस्टिक मिसाइल है और बहुत ज्यादा एडवांस है बे5 मिसाइल से बदल रहा है वह भी भारत की ओर की सीमा में ए

चीन ने 2010 में जब डैम बनाने की घोषणा की थी तो साथ ही यह भी कहा था कि उसका भारत से कोई भी संधि पानी को लेकर नहीं हुई है और यह बात भी वह सिर्फ आउट ऑफ सेंस ऑफ ट्रस्ट के लिए बता रहा है और आगे वह कोई भी डाटा शेयर करने वाला नहीं है भारत के अधिकारियों ने बार.बार इस पर नाराजगी जताई है कि चीन कोई भी डाटा नहीं बता रहा है और कोई प्लानिंग अपनी ठीक से नहीं बता रहा है जबकि भारत ने पाकिस्तान से उसकी उसके संबंध अच्छे ना होने के बाद भी 1960 में उससे सिंधु जल संधि की थी और इसके तहत सिंधु का जल 80 : तक पाकिस्तान के लिए भेजना मंजूर किया था और ऐसे ही 1996 में गंगा के पानी को लेकर बांग्लादेश से भी उसने संधि की है ए

चीन ने पिछले 40 वर्षों में अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार कर देश में अच्छा विकास किया हैए साथ ही दूसरे देशों के आधार भूत ढांचे को विकसित करने में भी उसने बहुत धन लगाया है एपर यदि वो देश उधार चुकाने मेँ सक्षम नहीं होता तो चीन उसके क्षेत्र में सैनिक सुविधाएं लेलेता है ।बहुत से छोटे देश उसका विरोध नहीं कर पाते ए और उसका प्रभाव क्षेत्र बढ़ जाता है। आज वह दुनिया का दूसरे नंबर की अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है। विस्तार बाद तो चीन की हमेशा से नीति रहा है उसके सीमा विवाद भी उससे लगे कई देशों के साथ चल रहे हैं साथ में चीन ने लगभग पूरी दुनिया के बाजारों में अपने माल को पहुंचा दिया है किसी भी देश में चीनी सामान बहुत आराम से और सस्ते दामों में मिलता है बहुत से देश चिकित्सीय सामानों के लिए ए त्योहारों के विशेष सामानों के लिएए बच्चों के खिलौनों को लेकर इलेक्ट्रॉनिक सामानों के लिए भी चीन पर निर्भर करते हैं।अतः उसका विरोध करके अप्रभावित रहना बहुत कठिन
होता जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ .

1ण वाटर रिसोर्सेज एअसम
2ण दी इकनोमिक टाइम्स ५ अक्तूबर २०१६
3ण दी वायर १ अक्तूबर २०१६
4ण बीबीसी समाचार २० मार्च २०१४
5ण न्यू साइंटिस्ट २५ अप्रैल २०१२
6ण दी इंडियन एक्सप्रेस १ फरवरी २०१३
7ण दी डिप्लोमैट ३० जून २०१५
8ण द टाइम्स ऑफ इंडिया
9ण इंडिया टुडे ९ अगस्त २०२०
10ण ष वाटर ष द्वारा ब्रम्ह चेलानी
11ण गूगल मैप्स
12ण दी इकनोमिक टाइम्स ३० जून २०२०